

**IGNOU.**  
*Based*

**NEERAJ®**

**B.H.D.E.-106**

हिन्दी भाषा : इतिहास  
और वर्तमान

*By: Vaishali Gupta*

*Question Bank cum Chapterwise Reference Book*  
**Including Many Solved Question Papers**



**NEERAJ**  
**PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*  
( An ISO 9001 : 2008 Certified Company )

Sales Office:  
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6  
Ph.: 011-23260329, 45704411,  
23244362, 23285501  
E-mail: [info@neerajignoubooks.com](mailto:info@neerajignoubooks.com)  
Website: [www.neerajignoubooks.com](http://www.neerajignoubooks.com)

**MRP ₹ 240/-**

**Published by:**

**NEERAJ PUBLICATIONS**

Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006

E-mail: [info@neerajignoubooks.com](mailto:info@neerajignoubooks.com)

Website: [www.neerajignoubooks.com](http://www.neerajignoubooks.com)

**Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only**

Typesetting by: Competent Computers

Printed at: Novelty Printer

**Notes:**

1. For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.
3. The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.
7. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
8. Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.
9. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
10. Subject to Delhi Jurisdiction only.

**© Reserved with the Publishers only.**

**Spl. Note:** This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.

## **How to get Books by Post (V.P.P.)?**

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website [www.neerajignoubooks.com](http://www.neerajignoubooks.com). You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website [www.neerajignoubooks.com](http://www.neerajignoubooks.com).

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).



**NEERAJ PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

**1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006**

**Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501**

E-mail: [info@neerajignoubooks.com](mailto:info@neerajignoubooks.com) Website: [www.neerajignoubooks.com](http://www.neerajignoubooks.com)

# CONTENTS

## हिन्दी भाषा : इतिहास और वर्तमान

*Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)*

<i>Question Paper—June, 2019 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—December, 2018 (Solved)</i>	1-3
<i>Question Paper—June, 2018 (Solved)</i>	1
<i>Question Paper—December, 2017 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—June, 2017 (Solved)</i>	1
<i>Question Paper—December, 2016 (Solved)</i>	1
<i>Question Paper—June, 2016 (Solved)</i>	1
<i>Sample Question Paper (Solved)</i>	1

क्रम सं.	<b><i>Chapterwise Reference Book</i></b>	पृष्ठ
----------	--	-------

### भारत की भाषाएँ और हिन्दी

1. भाषा की परिभाषा	1
2. भारतीय भाषाएँ और भारोपीय परिवार	6
3. भारतीय आर्य भाषाएँ	9
4. हिंदी भाषा	13
5. भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता	17

### हिंदी भाषा का इतिहास

6. संस्कृत भाषा	22
7. पालि, प्राकृत और अपभ्रंश	26
8. हिंदी भाषा का विकास	30

### हिंदी भाषा के विविध रूप

9. हिंदी भाषा की अवधारणा	36
10. हिंदी का जनपदीय आधार	40

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ
11.	हिंदी भाषा-क्षेत्र की प्रमुख बोलियाँ	45
12.	हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी	49
13.	बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा	53
<u>हिंदी के प्रकार्य</u>		
14.	हिंदी के विविध प्रकार्य	59
15.	हिंदी का प्रयोजनमूलक स्वरूप	65
16.	संपर्क भाषा हिंदी और हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप	73
17.	हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ	85
<u>शिक्षा में हिंदी</u>		
18.	पाठ्यचर्या में भाषा	90
19.	माध्यमिक शिक्षा में हिंदी	95
20.	उच्च शिक्षा में हिंदी	103
21.	शिक्षा माध्यम के रूप में हिंदी	108
22.	शिक्षण सामग्री	119
23.	कार्यक्षेत्र में हिंदी : समस्याएं और संभावनाएं	127
<u>संविधान में हिंदी</u>		
24.	संविधान में हिंदी संबंधी उपबंध	133
25.	संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार कार्रवाई	140
26.	राजभाषा अधिनियम और आदेश	146
27.	राजभाषा के विकास के विविध आयाम	153

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ
<u>विकास की दिशाएँ</u>		
28.	आधुनिक संदर्भों के लिए हिंदी भाषा का विकास	159
29.	हिंदी का आधुनिकीकरण	164
30.	हिंदी और मानकीकरण की समस्या	170
31.	हिंदी भाषा में यांत्रिक साधन	177
32.	भाषा प्रौद्योगिकी	185
		■ ■

**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

(June - 2019)

(Solved)

## हिन्दी भाषा : इतिहास और वर्तमान

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. भारत के प्रमुख भाषा परिवारों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-9, 'भारत के भाषा परिवार'

प्रश्न 2. हिन्दी भाषा की विभिन्न भूमिकाओं का आकलन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-14, 'हिन्दी भाषा की भूमिकाएं', अध्याय-9, पृष्ठ-38, 'हिन्दी भाषा की भूमिकाएं'

प्रश्न 3. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के आपसी रिश्ते के प्रमुख आधारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-37, 'हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का सवाल', अध्याय-12, पृष्ठ-50, 'हिन्दुस्तानी', पृष्ठ-51, 'हिंदी बनाम उर्दू'

प्रश्न 4. बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-53, 'बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा की प्रकृति' पृष्ठ-54, 'बोलचाल..... सामान्य अंतर'

प्रश्न 5. विश्व पटल पर हिन्दी की स्थिति पर विचार कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-17, पृष्ठ-85, 'परिचय'

प्रश्न 6. शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-21, पृष्ठ-109, 'हिंदी शिक्षा का माध्यम क्यों?'

प्रश्न 7. "आजीविका का प्रश्न भाषा के सवाल से जुड़ा है।" इस कथन के आलोक में हिंदी भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-अगर देशवासी अपनी भाषा (राजभाषा) में शिक्षा ग्रहण करता है तथा उसी भाषा के माध्यम से आजीविका भी पाता है, तो उसके व्यक्तित्व के साथ-साथ देश का भी पूर्ण विकास होता है, क्योंकि जो सहजता और मौलिकता अपनी भाषाभिव्यक्ति में होती है, अन्य भाषा (विदेशी) में नहीं।

शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति आजीविका के योग्य बनता है। भारत में सेवानियुक्ति का केन्द्र 'सरकार' है, जो केन्द्र तथा प्रादेशिक स्तर पर नियुक्तियाँ निकालती है और जब तक हिंदी माध्यम के लोग सेवाओं में नहीं आएंगे। तब तक देश में हिंदी काम-काज का वातावरण नहीं बनेगा। तीन तरह की सेवाएं भारत में की जाती हैं-प्रशासनिक, इसमें हिंदी तथा अष्टम सूची की भाषाओं में परीक्षा देने का प्रावधान है तथा बाद में चयनित व्यक्ति को काम करने के लिए हिंदी भी सिखाई जाती है। तकनीकी सेवाएं, इन सेवाओं की परीक्षा अंग्रेजी से ली जाती है, यहाँ हिंदी का स्थान नहीं है तो वाणिज्य-व्यापार क्षेत्र में-बैंक तथा निजी फर्म आदि हैं, जो जनता तक पहुँच रखने के कारण हिंदी में काम करते हैं।

इसे भी देखें-अध्याय-23, पृष्ठ-132, प्रश्न 1

प्रश्न 8. हिन्दी के मानकीकरण के औचित्य और इसके लिए किए गए प्रयासों की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-30, पृष्ठ-171, 'मानकीकरण का औचित्य', पृष्ठ-172, 'मानकीकरण के उपाय और क्रियान्वयन'

प्रश्न 9. कम्प्यूटर के आगमन के बाद टंकण और मुद्रण में हुए परिवर्तनों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-31, पृष्ठ-180, 'कम्प्यूटर और हिंदी'

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए—

(क) प्राकृत की बोलियां

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-7, पृष्ठ-27, 'प्राकृत की बोलियां'

(ख) विज्ञापन में हिंदी

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-15, पृष्ठ-69, 'विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी'

(ग) भाषा का त्रिभाषा सूत्र

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-18, पृष्ठ-90, 'त्रिभाषा-सूत्र'

(घ) जनभाषा हिन्दी

उत्तर—जनभाषा के रूप में भाषा की वह क्षमता जो अधिकांश जनता या लोगों के द्वारा समझी तथा बोली जाती है 'जनभाषा कहलाती है। हिंदी भारतवर्ष में इस आधार पर जनभाषा का तथा सम्पर्क भाषा का स्वरूप ग्रहण करती है।

जो भाषा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क बनाने में काम आती है, उसे 'संपर्क भाषा' कहा जाता है। इस दृष्टि से 'हिंदी' बोली बोलने वाले वर्गों तथा देश के अन्य क्षेत्रों में भाषाएं बोलने वालों के बीच संपर्क भाषा है। संपर्क भाषा का व्यापक

अर्थ राजभाषा पूरा करती है, क्योंकि राजभाषा के माध्यम से देश के विभिन्न न्यायालय, कार्यालय तथा विधायी निकाय एक-दूसरे से संपर्क करते हैं। दो विपरीत भाषा प्रदेश के लोगों में भाषिक संपर्क तब तक नहीं हो सकता, जब तक भाषायी माध्यम उपलब्ध न हो और इन परिस्थितियों में देश की संपर्क भाषा का सहारा लेना पड़ता है। आमतौर पर हिंदी के माध्यम से ही लोगों का संपर्क हो पाता है। विभिन्न स्थलों में, रेलगाड़ियों में या किसी भी सार्वजनिक जगहों पर व्यक्ति अगर अपनी भाषा से सामने वाले से संपर्क नहीं कर पाता तो वह हिंदी या अंग्रेजी के शब्दों से काम चलाता है। व्यावहारिक रूप से इस समय हिंदी देश के लोगों के बीच संपर्क भाषा बनी हुई है।

लोग हिंदी की जानकारी रखेंगे, तभी दूसरों से संपर्क कर सकते हैं। हिंदी के प्रचार के लिए मानो एक व्यापक आंदोलन-सा ही चल पड़ा। विभिन्न हिंदी संस्थाओं और स्कूली शिक्षा के सहयोग से देश के कोने-कोने में लोगों ने हिंदी सीखा और इसका प्रयोग किया। हिंदी के विकास में हिंदी फिल्मों, हिंदी गानों, दूरदर्शन के कार्यक्रमों का भी बहुत बड़ा हाथ है। हम राष्ट्रभाषा उस भाषा को कहेंगे, जो देश के लोगों को जोड़ती है तथा विभिन्न संस्कृतियों तथा साहित्यों का माध्यम बनती है। इस तथ्य पर हिंदी भाषा खरी उतरती है।

Publications ■■  
www.neerajbooks.com



# **Sample Preview of The Chapter**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# हिंदी भाषा : इतिहास और वर्तमान

## भारत की भाषाएँ और हिन्दी

### भाषा की परिभाषा



#### परिचय

मनुष्य बचपन से लेकर बुढ़ापे तक अपनी जिंदगी समाज में रहकर ही पूरी करता है और जीवन जीने के लिए उसे कई प्राथमिकताओं के अतिरिक्त सबसे ज्यादा 'भाषा' की आवश्यकता होती है, जिसे वह 'समाज' में रहकर ही अर्जित करता है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं—'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।'

सामाजिक जीवन के निर्वाह के लिए उसे (मनुष्य को) भाषा की मदद लेनी पड़ती है, क्योंकि अपनी बात दूसरे मनुष्य तक वह भाषा के माध्यम से ही पहुँचा सकता है।

मनुष्य भाषा की विवेचना तीन तरह से करता है—संप्रेषण के द्वारा, सामाजिक व्यवहार के द्वारा और संरचना के द्वारा। 'भाषा' संप्रेषण की प्रक्रिया से गुजरकर ही वक्ता से श्रोता तक पहुँचती है। वक्ता का संदेश श्रोता तक किसी-न-किसी माध्यम से ही पहुँचता है, जिसे हम प्रतीक कहते हैं और सन्देश प्रथम अवस्था में अमूर्त होता है, जिसे मूर्त करने के लिए 'कोड-व्यवस्था' करनी पड़ती है। सामाजिक व्यवहार में व्यवहृत भाषा परिवर्तनशील और अनेकरूप है और यह अनेकरूपता उसे समाज के कारण मिलती है। भाषा समाज में ही सीखी और बोली जाती है।

भाषा की संरचना तीन तरह से की जाती है—ध्वनि-संरचना, वाक्य-संरचना और अर्थ-संरचना, अर्थात् भाषा को हम त्रिपक्षीय संरचना कह सकते हैं, जिसके अनुसार निश्चित स्थान, निश्चित शृंखला-क्रम और सोपान-क्रम के द्वारा भाषा को व्यवस्थित किया जाता है। स्पष्टतः भाषा की परिभाषा कुछ इस प्रकार होगी—भाषा यादृच्छिक प्रतीकों से निर्मित वह कोड-व्यवस्था है, जिसकी सहायता से मनुष्य अपनी बात, अपने विचारों या अपने संदेशों का दूसरे मनुष्यों से आदान-प्रदान करता है।

#### अध्याय का विहंगावलोकन

#### भाषा-संप्रेषण के स्वरूप में संप्रेषण का स्वरूप

मनुष्य बचपन से लेकर बुढ़ापे तक समाज में रहता है और भाषा के माध्यम से वह अपना सामाजिक संपर्क बनाता है। भाषा के माध्यम से ही वह अपनी बात दूसरे मनुष्य तक पहुँचा पाता है इस तरह मनुष्य को हम 'भाषायी प्राणी' भी कह सकते हैं, क्योंकि 'भाषा' ही मनुष्य को जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों से भिन्न करती है। 'भाषा' संप्रेषण की प्रक्रिया से गुजरकर ही वक्ता से श्रोता तक जाती है। वक्ता अपनी बात या अपना संदेश तभी बोलता या प्रेषित करता है, जब श्रोता की उपस्थिति होती है। स्पष्ट है कि भाषा-संप्रेषण के लिए तीन बातों का होना आवश्यक है—वक्ता, श्रोता और संदेश। उदाहरणतः, किसी से कुछ पूछना या किसी को कुछ बताना 'संदेश' कहलाता है, जैसे—'तुम पटना से कब आए?' 'तुम्हारी चिट्ठी आई है।' मनुष्य कई प्रकार से संप्रेषणीयता कायम कर सकता है—किसी से पूछकर, किसी को बताकर, किसी को कुछ जानकारी देकर, किसी को आदेश देकर, किसी से अनुरोध करके या किसी को अपने मन के भाव बताकर वह अपनी बात भाषा के माध्यम से श्रोता तक पहुँचा सकता है।

हाँ, संप्रेषणीयता के लिए संभाषण की स्थिति आवश्यक है। बिना श्रोता के भी वक्ता कुछ बोल सकता है, किंतु ऐसी उक्तियाँ या तो छोटी होती हैं या बड़बड़ाहट में बदल जाती हैं।

भाषा की संप्रेषण प्रक्रिया के लिए प्राणियों का संप्रेषण इस दिशा में सीमित होता है। जैसे—किसी को पास बुलाना या दूर भगाना, अपने प्रति आकर्षित करना, खतरे से आगाह करना, भोजन की सूचना देना, आनंद प्रकट करना (जैसे—पक्षी का चहचहाना, कुत्ते का भौंकना, किंतु मनुष्य विभिन्न प्रकार के विचारों के लिए अलग-अलग

2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : इतिहास और वर्तमान

संदेश बनाता है। लेकिन बिना श्रोता के वक्ता के संदेश का कोई महत्त्व नहीं, इसलिए संप्रेषणीयता के लिए वक्ता-श्रोता-संदेश की स्थिति अत्यन्त आवश्यक है।

**प्रतीक व्यवस्था**

वक्ता के संदेश को श्रोता तक पहुँचाना एक माध्यम का काम होता है। माध्यम को हम 'प्रतीक' कहते हैं। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि 'प्रतीक' भाषा का रूप लेकर वक्ता के संदेश को उत्पन्न करने का काम करते हैं। माध्यम पाँच तरह के हो सकते हैं—नेत्रों के लिए दृश्य, कानों के लिए श्रव्य, नाक के लिए गंध, जिह्वा के लिए स्वाद और त्वचा के लिए स्पर्श माध्यम। माध्यम वक्ता और श्रोता के मध्य एक कड़ी का काम करते हैं, जिनके द्वारा कोई संदेश श्रोता तक प्रेषित होता है।

संप्रेषण-प्रक्रिया के लिए सबसे ज्यादा माध्यम मनुष्यों के पास ही हैं और जीव-जंतुओं का संप्रेषण-माध्यम उनके शरीर के किसी भी एक अंग को ही कहा जा सकता है, जैसे—चीटियों गंध के माध्यम से अर्थ संप्रेषण करती हैं, मधुमक्खियाँ दृश्य माध्यम से तथा स्तनपायी जानवरों का रेंकना, रंभाना, गर्जना, भौंकना, चिड़ियों का चहचहाना आदि वागेन्द्रियों के माध्यम से होता है।

मानव के लिए उच्चरित माध्यम ही सर्वप्रमुख है, क्योंकि भाषा की ध्वनियों के उच्चारण की श्रेष्ठ व्यवस्था के कारण ही मनुष्य की अन्य ज्ञानेन्द्रिय शक्तियाँ जीव-जंतु की तुलना में घटती गईं, जिसकी वजह से मनुष्य के संप्रेषण के लिए उच्चरित भाषा ही प्रमुख साधन बन गई।

संदेश को वक्ता के पास से श्रोता तक ले जाने का काम कोई माध्यम करता है, किंतु उसे (संदेश) उत्पन्न तो कोई मन ही करता है और ग्रहण भी कोई मन ही करता है और मन अमूर्त होता है, इसलिए संदेश को भी पहले अमूर्त होना होता है, लेकिन अमूर्त संदेश या विचारों को मूर्त रूप देने के लिए मनुष्य प्रतीकों का इस्तेमाल करता है। उदाहरण के लिए, यातायात-निर्देश के लिए तीन रंग की बत्तियों का प्रयोग होता है—लाल, पीली और हरी। 'लाल' रंग का अर्थ है कि यातायात रुक जाए, 'पीली' का अर्थ है यातायात चलने के लिए तैयार रहे और 'हरी' का अर्थ है कि यातायात चल दे।

मनुष्य की तरह अन्य प्राणी भी भाषा-संप्रेषण के लिए विभिन्न प्रतीकों की सहायता लेते हैं, जैसे—डॉल्फिन श्रव्य प्रतीकों की मदद से भाव-संप्रेषण करती है। मनुष्य की भाषा कोड रूप में अतिविकसित है, उसके पास 40-50 ध्वनियाँ ही बोलने के लिए होती हैं। मनुष्य की भाषा में ध्वनियाँ नहीं, ध्वनियों से बने शब्द प्रतीक हैं।

भाषा का निर्माण और उसके विभिन्न अर्थ की व्युत्पत्ति समाज के द्वारा होती है। किसी भी शब्द का क्या अर्थ होना चाहिए इसका निर्णय भाषा बोलने वाले का होता है, इसलिए शब्दों को यादृच्छिक प्रतीक कहते हैं। तात्पर्य यह है कि भाषा की सृष्टि समाज के माध्यम से ही की जाती है।

मानव-संप्रेषण की प्रक्रिया में पाँच घटकों की भूमिका होती है—वक्ता, श्रोता (मनुष्य), माध्यम (मुँह से निःसृत ध्वनियाँ तथा कानों द्वारा ग्रहण की गई ध्वनियाँ), कोड-व्यवस्था (हमारी भाषा) और संदेश (मनुष्य के विचार)। इस प्रकार, हम यह भी कह सकते हैं—“भाषा यादृच्छिक प्रतीकों से निर्मित कोड-व्यवस्था है, जिसके

द्वारा मनुष्य दूसरे मनुष्यों के मुख से निःसृत ध्वनियों के माध्यम से अपने विचारों की सामाजिक सिद्धि के लिए संदेशों का आदान-प्रदान करता है।”

**भाषा-सामाजिक व्यवहार के रूप में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है**

मनुष्य अपना संपूर्ण जीवन समाज में रहकर ही गुजारता है। समाज से बाहर उसकी जिन्दगी चलती नहीं, थम जाती है। मनुष्य के सभी व्यवहार, सभी जैविक क्रियाएँ समाज पर ही निर्भर करती हैं।

प्राणियों की सभी क्रियाएँ मनुष्य से भिन्न होती हैं और उनकी क्रियाओं के दो ही उद्देश्य होते हैं—शरीर-रक्षा और प्रजनन। शरीर-रक्षा के लिए उनको आहार ग्रहण करना होता है तथा प्रजनन के लिए साथी बनाना पड़ता है। संतान को पालना होता है तथा रहने के लिए माँद, घोंसला या बिल आदि बनाना पड़ता है, इसलिए उनकी सारी सामाजिक व्यवस्था और संप्रेषण-व्यवस्था यहीं तक सिमटी रह जाती है, लेकिन मनुष्य का दायरा बड़ा होता है तथा वह स्वयं तथा अपने परिवार तक ही सीमित नहीं रहता। उसका आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' होता है तथा वह वंश से ऊपर उठकर समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए सोचता है। उसे समाज में रहने के लिए भाषा की जरूरत होती है, जिसे वह समाज में रहकर ही अर्जित कर सकता है और इसी के (भाषा) माध्यम से वह समाज में जीवनयापन करते हुए उसे गति दे सकता है, इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहना उपयुक्त ही नहीं तर्कसंगत भी है।

कोई भी मनुष्य समाज से दूर, एकाकी रहकर, भाषा नहीं सीख सकता। भाषा न जन्मजात होती है और न ही पैतृक संपत्ति। बच्चे का पालन जिस समाज, जिस परिवेश में होगा, बच्चा उसी समाज की भाषा सीखेगा। अगर, हिंदी भाषी माता-पिता का बच्चा अमेरिकी समाज में पलेगा तो वह हिंदी नहीं अमेरिकी ही बोलेगा। कुछ मतों के अनुसार भाषा ईश्वर प्रदत्त है। समस्त सृष्टि ही अगर ईश्वर की देन है, तो इसके अनुसार भाषा भी ईश्वर की ही देन है।

कारण जो भी हो, इतना तो तय है कि भाषा समाज में बने रहने का साधन है और यह समाज से ही सीखी जाती है।

**भाषा सामाजिक व्यवहार है**

समाज में रहते हुए मनुष्य जो भी व्यवहार या क्रियाएँ करता है, वह सामाजिक व्यवहार कहलाता है। किसी के आने पर खड़े हो जाना, नमस्ते करना आदि सामाजिक व्यवहार हैं।

सामाजिक व्यवहार अलग-अलग समाजों में अलग-अलग होते हैं। कहीं हाथ मिलाकर, कहीं हाथ जोड़कर, तो कहीं झुककर सलाम करने को अभिवादन कहा जाता है।

भाषा के प्रतीकों की तरह सामाजिक व्यवहार भी यादृच्छिक है। सामाजिक व्यवहार के पीछे कोई तर्क नहीं होता है कि यह व्यवहार ऐसा होना चाहिए या वैसा होना चाहिए। यह तो जहाँ जैसा चलन है, वैसा ही किया जाता है। हम अपने बड़ों का अभिवादन हाथ जोड़कर इसलिए करते हैं कि हमें ऐसी ही सीख अपने गुरुजनों से मिली है तथा अंग्रेज हाथ मिलाकर अभिवादन इसलिए करते हैं, क्योंकि उनके समाज में वही चलन है।

मनुष्य समाज में ही रहकर भाषा सीखता है और समाज में ही भाषा का प्रयोग करता है, इसीलिए भाषा सामाजिक व्यवहार कहलाती है। अलग-अलग समाजों में अलग-अलग भाषाएँ प्रयुक्त होती हैं।

हिंदी समाज में हिंदी क्यों बोली जाती है और अंग्रेजी समाज में अंग्रेजी क्यों बोली जाती है, इसके पीछे कोई तर्क नहीं, केवल यादृच्छिकता है।

अर्थ-संप्रेषण के लिए भाषा ही उपयुक्त माध्यम है, इसके सहयोग से हम जटिल-से-जटिल विचारों को व्यक्त कर सकते हैं।

सामाजिक प्राणी होने के कारण कुछ व्यापार (कार्य) हमारे लिए जरूरी होते हैं, जिन्हें हम भाषा के माध्यम से ही कर सकते हैं, जैसे किसी को सहमति या सलाह दे सकते हैं, किसी से अनुनय-विनय कर सकते हैं या अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं या किसी बात से इनकार अथवा इकरार कर सकते हैं।

संप्रेषण के लिए चिंतन भी एक आवश्यक तत्व है, जो व्यक्ति की निजी भूमिका के रूप में कार्य करता है। मनुष्य का वर्तमान, भूत, भविष्य सब कुछ भाषा के माध्यम से ही समाज में संपन्न होता है।

भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास तथा भौतिक संस्कृति के विकास का आधार है। भाषा संस्कृति की पोषिका है। समाज के धार्मिक विचार, विभिन्न कर्मकांड, ज्ञान-विज्ञान का भंडार तथा साहित्य सभी कुछ भाषा के द्वारा ही आगे बढ़ते हैं। भाषा समाज की सांस्कृतिक धरोहर की वाहक है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही विचारों की गहराइयों तक पहुंच पाते हैं।

### समाज में भाषा

समाज और भाषा का संबंध अभिन्न है, क्योंकि मनुष्य भाषा के सहयोग से ही समाज का गठन करता है और समाज में ही वह भाषा का अर्जन करता है। समाज में मनुष्य को कई तरह की सामाजिक भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। एक मनुष्य कई रिश्तों से जुड़ा हुआ होता है, जैसे-माता-पिता के लिए पुत्र, पत्नी के लिए पति, पुत्र के लिए पिता, भाई-बहनों के लिए भाई, पड़ोसियों के पड़ोसी, मित्र के लिए मित्र, गुरु के लिए शिष्य, अधिकारी के लिए कर्मचारी या कर्मचारी के लिए अधिकारी। मनुष्य के हर रिश्ते की सामाजिक मर्यादा अलग-अलग होती है। जिस तरह का व्यवहार मनुष्य अपने पिता के सामने करता है, वैसा वह अपने पुत्र के सामने नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, कहीं हाथ मिलाकर 'हैलो' कहते हैं तो कहीं सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं। भाषा के प्रयोग में भी भिन्नताएं होती हैं, जैसे-

अंतरंग शैली के लिए-जरा सुनना तो,

अनौपचारिक शैली के लिए-जरा सुनो,

सामान्य शैली के लिए-कृपया इधर सुनिए,

औपचारिक शैली के लिए-यदि कष्ट न हो तो इधर सुनें,

रूढ़ शैली के लिए-मेरा निवेदन है कि मुझे सुनने की कृपा करें।

मनुष्य के सामाजिक व्यवहार की भिन्नता का एक बड़ा कारण उसके जीवन का विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों से जुड़ा होना भी है। ये सामाजिक क्षेत्र मोटे तौर पर कहे जा सकते हैं-घर-परिवार, स्कूल-कॉलेज, क्लब, बाजार, कार्यालय, धर्मस्थल, स्टेशन आदि। क्षेत्रों की विभिन्नता के कारण एक ही मनुष्य भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवहार करता है। हर जगह मनुष्य का वस्त्र-चयन तथा भाषा-शैली पृथक् होती है। एक ही मनुष्य घर में बनियान-पाजामा, अतिथि के सामने कुर्ता-पाजामा, बाहर जाने के लिए पैंट-शर्ट, पूजा के समय धोती किन्तु ड्यूटी पर यूनिफॉर्म पहनता है। ऐसी ही स्थिति भाषा के साथ भी है। वह घर में प्रादेशिक बोली, अतिथि-अभ्यागतों के सामने हिंदी

तथा ऑफिस आदि में अंग्रेजी का प्रयोग करता है। इस तरह, एक ही मनुष्य 'अनेकभाषी' कहलाता है।

हर जगह मनुष्य की भाषा-शैली के साथ उसके लहजे (शब्द प्रयोग) में भी काफी अंतर आ जाता है, जैसे कि घर में वह आत्मीयता भरे शब्द-'तू' या 'तुम' का प्रयोग करता है तथा कार्यालय में अकर्मक क्रिया मुक्त अखंडित वाक्य (जैसा आपको सूचित किया जाता है) का प्रयोग करता है तो 'मीलॉर्ड' आपको न्यायालय के अलावा और कहीं सुनने को नहीं मिलता।

हर जगह की अपनी एक भाषा, एक बोली होती है, जिसकी वजह से उस क्षेत्र या क्षेत्रवासी की पहचान होती है। स्पष्ट है कि भाषा अनेकरूपा है तथा उसकी यह अनेकरूपता समाज की देन है।

### भाषा में परिवर्तन

सृष्टि परिवर्तनशील है और इस धरती पर हर वस्तु यहाँ तक कि प्रकृति भी नित नवीन (परिवर्तनशील) है। कहा जाता है कि जीवन्तता के लिए परिवर्तन जरूरी है और जहाँ परिवर्तन नहीं, जीवन्तता हो ही नहीं सकती।

हम अपने अतीत को देखें, तो पाएंगे कि तब से लेकर आज तक हमारे समाज में कितना परिवर्तन आ चुका है। पुराने जमाने के कपड़ों या जेवरों, पुराने जमाने के विचारों या रस्मों-रिवाजों में मौलिकता (मूल में एक) होते हुए भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन तो आ ही गया है। तात्पर्य यह है कि जिस तरह समाज में समय के साथ परिवर्तन आता है, उसी तरह भाषा में भी कालक्रम से परिवर्तन होता रहता है, क्योंकि भाषा एक सामाजिक व्यवहार है। उदाहरणतः, संस्कृत के 'सप्त' ने समय के साथ 'सत्त' और 'सात' का रूप लिया। ध्वनियों का उच्चारण जैसे वेदकालीन ऋषि करते थे, हम नहीं कर पाते। अर्थ के धरातल पर भी परिवर्तन आया है, पहले मुनि-ऋषियों के व्यवहार को 'मौन' कहा जाता था, पर अब चुप्पी को 'मौन' कहा जाता है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवहारों में भी परिवर्तन स्वाभाविक है, क्योंकि अन्य सांस्कृतिक संपर्क में आने से भाषा पर उनका प्रभाव पड़ता है और भाषा में परिवर्तन आना शुरू हो जाता है। हिंदी में बड़ी संख्या में फारसी और अंग्रेजी से शब्द लिए गए हैं। परिवर्तन का एक बड़ा लाभ यह भी होता है कि इससे भाषा का नित नवीन विस्तार होता रहता है, इसलिए सच कहा गया है कि भाषा परिवर्तनशील है और इसी वजह से वह 'जीवन्त' होती है।

### भाषा-संरचना के रूप में

#### संरचना का तात्पर्य

जब किसी भी वस्तु का निर्माण होता है, तो उसके निर्मित होने में उसके संरचक (घटक) का विशेष योगदान होता है। उदाहरण के तौर पर 'मोटरबाइक' की संरचना को ले लीजिए। सभी संरचनाओं की तरह 'मोटरबाइक' के भी अनेक संरचक या अवयव या घटक हैं, जैसे कि उसकी सीट है, हैंडल है, ब्रेक है, और दो पहिए हैं इत्यादि। इन सभी संरचकों का 'मोटरबाइक' की संरचना में अपना-अपना महत्त्व है।

संरचना के सभी संरचकों की संख्या, प्रकार्य और स्थान ही तय नहीं होते, बल्कि उनकी क्रमबद्धता भी निश्चित की जाती है।

संरचना में क्रमबद्धता के साथ संरचकों का सोपान-क्रम भी महत्त्व रखता है। सोपान-क्रम से तात्पर्य यह है, सामाजिक जीवन में कई स्थानों पर सोपान-क्रम (सीढ़ी) दिखता है, जहाँ मनुष्य एक-एक सोपान

4 / NEERAJ : हिंदी भाषा : इतिहास और वर्तमान

(सीढ़ी) पर कदम रखकर ऊपर पहुँचता है, जैसे कि कार्यालय व्यवस्था को ही देखें तो पाएँगे कि वहाँ नीचे के सोपान पर क्लर्क हैं, उससे ऊपर असिस्टेंट, उससे ऊपर सुपरिंटेंडेंट और मैनेजर-डायरेक्टर इत्यादि। व्यक्ति की तरक्की भी इसी सोपान-क्रम से होती है।

संरचना के सोपान-क्रम में प्रत्येक संरचक अपने से ऊपर के संरचक का अंग है, तो अपने से नीचे के संरचकों का अंगी (स्वामी)।

इस प्रकार, संरचना में संरचकों की संख्या, स्थान, प्रकार्य, क्रमबद्धता के अतिरिक्त सोपान-क्रम का भी विशेष महत्त्व है।

**भाषा की संरचना**

जिस तरह किसी वस्तु की संरचना होती है, उसी तरह भाषा की भी संरचना होती है। हमारी भाषा (वार्तालाप) वाक्यों के द्वारा ही संप्रेषित होती है और इसकी संरचना में भी स्थान, कर्ता, क्रिया, कर्म और समय आदि की सहायता ली जाती है। उदाहरण के तौर पर, ये वाक्य गौर करने लायक हैं। 1. लड़कियाँ, 2. मैदान में, 3. शाम को, 4. गेंद, 5. खेलती हैं। इस वाक्य की संरचना में पाँच संरचकों का सहयोग है। संरचक 1 का प्रकार्य कर्ता का है, 4 का प्रकार्य कर्म का है, 5 का प्रकार्य क्रिया का है, 2 का प्रकार्य 'स्थान' की सूचना देना है तथा 3 का प्रकार्य 'समय' की सूचना देना है।

स्थान की दृष्टि से हिंदी भाषा में वाक्य-संरचना में सबसे पहले कर्ता, उसके बाद कर्म और क्रिया सबसे अंतिम स्थान पर नियुक्त किये जाते हैं। 'स्थानसूचक' और 'समयसूचक' क्रिया के पहले वाक्य में कभी भी आ सकते हैं, पर कर्ता और कर्म के बीच ही आते हैं।

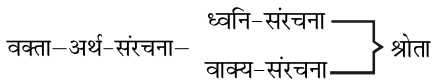
वाक्य-संरचना को शृंखलाबद्ध करने में क्रिया मुख्य होती है—वही कर्ता, कर्म आदि को बंधन में रखती है। सोपान-क्रम के लिए वाक्य, पदबंध, शब्द और शब्दांश की क्रमबद्धता रखनी होती है।

**भाषिक संरचनाएँ**

भाषिक संरचना की प्रक्रिया वस्तुओं की संरचनाओं से अधिक जटिल, सूक्ष्म और अमूर्त होती है।

वाक्य-संरचना के नियमों के अनुसार संरचित करने पर ही सार्थक वाक्य बनता है। वाक्य की संरचना के समय वाक्य अमूर्त होता है, जिसे ध्वनि-कोड में बद्ध कर मूर्त ध्वनियों द्वारा ही प्रकट किया जा सकता है। श्रोता ध्वनियों के द्वारा ही वाक्य को ग्रहण करता है, वाक्य में सम्मिलित शब्दों/शब्दांशों को समझता है तथा उनसे निकले विबों/विंब संबंधों को समझते हुए संदेश ग्रहण करता है।

सामान्यतया भाषा की संरचना में दो मुख्य तत्त्व होते हैं— (1) संदेश पक्ष तथा (2) बोली हुई भाषा का रूप। भाषा का अर्थ पक्ष उसका संदेश होता है और बोली गई भाषा उस अर्थ को प्रतीकों के द्वारा श्रोता तक पहुँचाती है। तात्पर्य यह है कि वक्ता के द्वारा बोली गई भाषा ध्वनियों के द्वारा व्यक्त होती है। भाषा वक्ता द्वारा श्रोता तक कैसे पहुँचती है, इसे इस प्रकार समझा जा सकता है—



स्पष्ट है कि भाषा की संरचना तीन मुख्य संरचकों द्वारा होती है। ध्वनि-संरचना, भाषा के प्रतीक निर्माण और उच्चारण की व्यवस्था को प्रकट करती है। वाक्य-संरचना द्वारा शब्दों की रचना और शब्दों से वाक्य-रचना का स्वरूप स्पष्ट होता है। अर्थ-संरचना में वाक्यों के माध्यम से अर्थ को व्यक्त किया जाता है।

**बोध-प्रश्न**

प्रश्न 1. भाषा के निर्माण में ध्वनियाँ, प्रतीक और कोड-व्यवस्था, इन तीनों संकल्पनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एक मनुष्य अपनी बात या अपने विचार भाषा के द्वारा ही दूसरे मनुष्य तक पहुँचाता है, अर्थात् भाषा संप्रेषण की प्रक्रिया से गुजरकर वक्ता से श्रोता तक जाती है और संप्रेषण के लिए ध्वनियों का होना आवश्यक है, क्योंकि ध्वनियों से ही शब्द का निर्माण होता है तथा श्रोता वक्ता के संदेशों को ग्रहण कर पाता है।

मनुष्य संप्रेषण के लिए विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग करता है तथा वक्ता के अंदर विचार अमूर्त रूप में विद्यमान रहते हैं और उन्हें मूर्त रूप देने के लिए वक्ता को 'प्रतीक' की आवश्यकता होती है।

संदेश को वक्ता के पास से श्रोता तक लाने का काम कोई-न-कोई माध्यम करता है, किंतु उसे (संदेश को) उत्पन्न तो मन करता है और मन अमूर्त होता है, इसलिए संदेश को भी अमूर्त होने की आवश्यकता होती है और अमूर्त होने की शर्त ही 'कोड' (Code) को जन्म देती है। जैसे—यातायात में लाल, हरी और पीले रंग की लाइट प्रतीक के रूप में कार्य करती हैं और जब मनुष्य का मन हर रंग को एक निश्चित परिभाषा में बाँध देता है तो वह 'कोड' कहलाता है। स्पष्ट है कि भाषा के निर्माण में ध्वनियों, प्रतीकों और कोड-व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

**अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न**

प्रश्न 1. "भाषा एक सामाजिक व्यवहार है।" टिप्पणी लिखें।

उत्तर—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में सदस्य के रूप में वह जो व्यवहार करता है, उसे सामाजिक व्यवहार कहते हैं। सभी समाजों के अपने नियम तथा रूढ़िवादिताएँ होती हैं, जैसे अंग्रेज आपस में मिलने पर हाथ मिलाते हैं और भारतीय आपस में मिलने पर नमस्कार करते हैं। भाषा एक सामाजिक व्यवहार है, जिसे मनुष्य समाज से सीखकर समाज में ही प्रयोग करता है। अलग-अलग समाजों में अलग-अलग भाषाएँ होती हैं। समाज में आपसी व्यवहार के लिए शारीरिक हाव-भाव से भी संप्रेषण संभव है, किंतु इसके लिए भाषा का माध्यम सबसे उपयुक्त माना जाता है। भाषा के माध्यम से हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। भाषा के माध्यम से आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परस्पर आदान-प्रदान किया जा सकता है। भाषा से ही सामाजिक जीवन संपन्न होता है। समाज लोगों का समूह है, जिसमें सभी की क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं। ये क्रियाएँ भाषा द्वारा ही संभव हो सकती हैं। यदि हम अतीत की ओर देखें, तो समझ पायेंगे कि भाषा के बिना संस्कृति का पनपना संभव नहीं है। समाज में धार्मिक विचार, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य सभी भाषा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। व्यक्तित्व का विकास भी भाषा के द्वारा ही होता है। किसी भी वस्तु के निर्माण का आधार मनुष्य का संचित ज्ञान होता है, जोकि भाषा के माध्यम से ही समाज को विरासत में मिलता है। भाषा के बिना समाज और संस्कृति का कोई महत्त्व नहीं है।